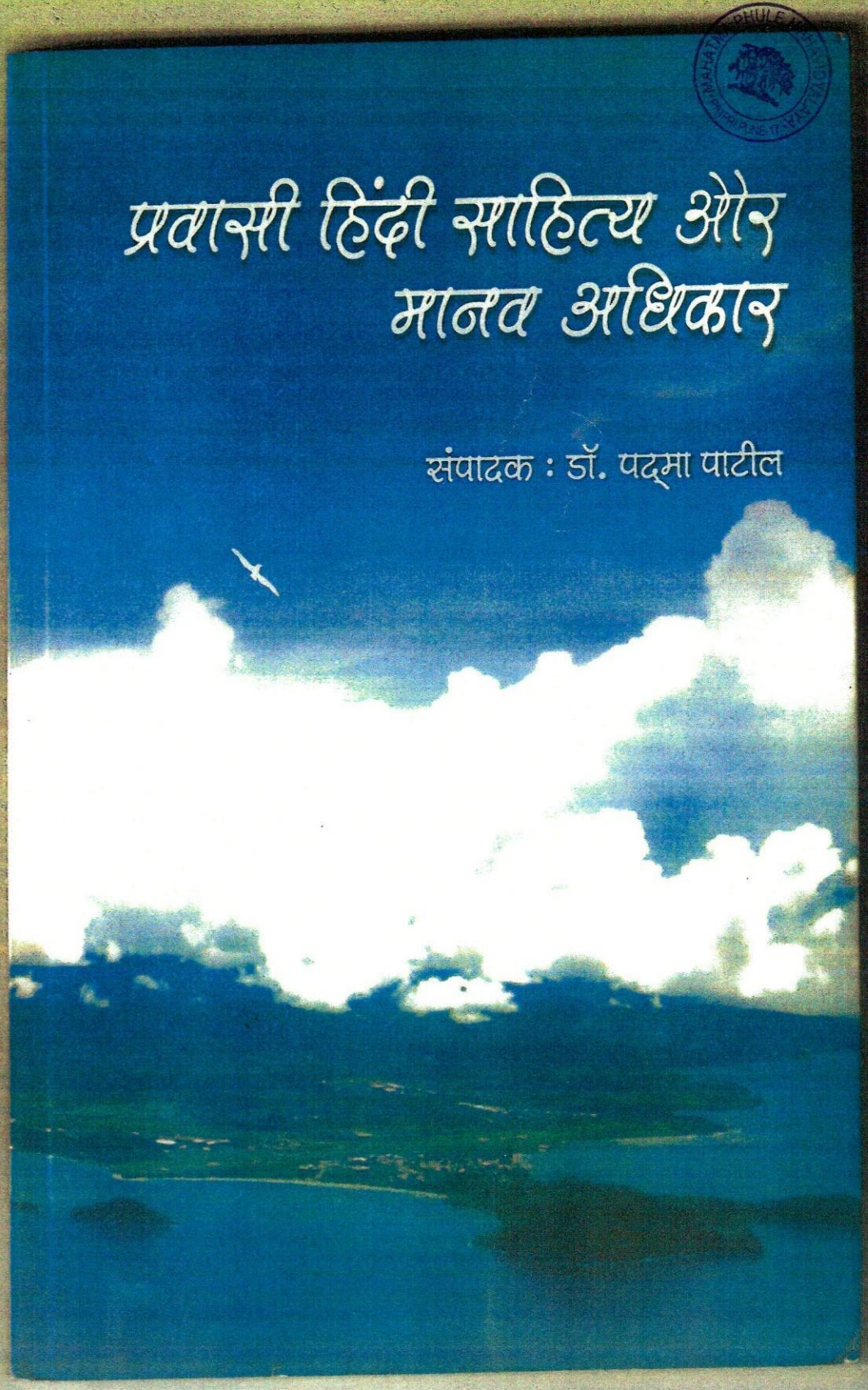

17-18

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA

प्रवासी हिंदी साहित्य और मानव अधिकार

ISBN : 978-81-933359-4-9

© संपादकाधीन

डॉ.पद्मा पाटील
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर.,महाराष्ट्र:भारत
भ्रमणध्वनि : 00 91 9823077769

नॉटनल : ई-लायब्ररी संगठन,लखनौ द्वारा ऑनलाइन प्रकाशन
नीलाभ श्रीवास्तव,सहसंस्थापक तथा प्रधान कार्यकारी अधिकारी

प्रकाशक : नॉटनल : ई-लायब्ररी संगठन,लखनौ

संस्करण : 2017

आवरण: पद्मा

मूल्य: रु.250 /-

मुद्रक: भारती मुद्रणालय,शाहुपुरी,कोल्हापुर:416001

प्रवासी हिंदी कविता और मानव अधिकार

डॉ.कामायनी सुर्वे

सारांश :

प्रत्येक व्यक्ति एक मनुष्य है और इसी कारण उसे जो अधिकार प्रकृतित: प्राप्त होते हैं, उन्हें 'मानव अधिकार' कहा जाता है। इनमें स्वतंत्रता,समता,बंधुता, न्याय को वरीयता दी गई है। वंश,वर्ण,भाषा,धर्म,राष्ट्र,लिंग,संपत्ति,जन्म जैसे आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव न करते हुए विश्व के सभी मानवों को जो समान अधिकार प्राप्त होते हैं, वे मानव अधिकार हैं। प्रस्तुत शोधालेख में 'मानव अधिकारों के परिप्रेक्ष्य में प्रवासी हिंदी कविताओं का अनुशीलन' किया गया है। प्रवासी भारतीय साहित्य की संकल्पना व्यापक है। प्रवासियों के हिंदी भाषा में अभिव्यक्त साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी हिंदी कविताओं में मानव अधिकारों की अभिव्यक्ति हुई है। स्त्री-पुरुष समता, भ्रष्टाचार एवं हिंसाचार उन्मूलन, शोषण और अत्याचार का विरोध, समता, धर्मनिरपेक्षता, व्यक्तित्व विकास, मानवता की जययात्रा की अनुगूँज के रूप में प्रवासी हिंदी कविताओं में मानव अधिकारों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। प्रवासियों की वेदना, मानव अधिकारों के हनन से संबंधित घटनाओं का चित्रण उनके काव्य में हुआ है। मिथक, प्रतीक, बिंब, छंद, अलंकार जैसे साहित्यिक अभिव्यक्ति के उपादानों के तहत प्रवासी हिंदी कविता का शैली पक्ष निखर उठा है। एक मानव विश्व के किसी भी मानव के साथ मानवता से युक्त व्यवहार करें यही मानव अधिकार का सार है, जो 21 वीं शताब्दी की प्रवासी हिंदी कविता में परोक्ष रूप में प्रस्तुत है।

मूल शब्द :

मानव अधिकार, प्रवासी हिंदी कविता, 21 वीं शताब्दी

प्रस्तावना :

मानव अधिकार मनुष्य के अस्तित्व की पहचान हैं। संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा 10 दिसंबर,1945 ई. के दिन मानव अधिकारों का वैश्विक घोषणापत्र जारी किया गया। यही कारण है कि 10 दिसंबर 'मानव अधिकार दिवस' के रूप में मनाया

जाता है। भारतीय संविधान द्वारा मानव अधिकारों का समर्थन किया गया है। जनतांत्रिक मूल्य मानव अधिकारों की नींव हैं। राजनीतिक एवं नागरी अधिकार, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकार तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक अधिकार इस दृष्टि से मानव अधिकारों का वर्गीकरण किया जाता है। नारी,बालक,मजदूर,कैदी, निर्वासित,अपाहिज,आदिवासी,वृद्ध,अल्पसंख्यक लोगों के अधिकारों की सुरक्षा हेतु मानव अधिकार आयोग कार्यरत है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शोषण का विरोध, समाज के दुर्बल लोगों का सबलीकरण, न्यायालयीन संरक्षण के लिए मानव अधिकारों की सुरक्षा जरुरी है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के साहित्य में मानव अधिकारों से संबंधित बातों का चित्रण हुआ है जो प्रस्तुत शोधालेख के केंद्र में रहा है।

प्रवासी साहित्य : अवधारणा :

प्रवासी हिंदी कविताओं पर विमर्श करने से पहले प्रवासी साहित्य की अवधारणा समझना उचित होगा। प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।भारतीय मूल के विदेशों में स्थित लोग प्रवासी कहलाते हैं। ये प्रवासी अमेरिका, कैनाडा, दक्षिण अफ्रीका, फ़िजी, मॉरिशस, जापान, ब्रिटेन, खाड़ी देश, त्रिनिदाद जैसे विविध विदेशों में स्थायी रूप से आवास कर रहे हैं। कुछ प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फ़िजी, मॉरिशस, त्रिनिदाद जैसे देशों में भेजे गए थे। कुछ प्रवासी खाड़ी देशों में कुशल अथवा अर्द्धकुशल मजदूर के रूप में गए थे। कुछ प्रवासी अस्सी-नब्बे के दशक में गए उच्चशिक्षित उच्चमध्यवर्गीय हैं जो बेहतर भौतिक जीवन हेतु विदेशों में गए हैं। आज 21 वीं शताब्दी में नौकरी के लिए कुछ भारतीय स्थायी रूप में विदेशों में रह रहे हैं। प्रवासी भारतीय लोग मजदूर, व्यापारी, शिक्षक अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में दुनियाभर में कार्यरत हैं। अपनी सांस्कृतिक विरासत तथा शैक्षिक योग्यता के कारण वे विदेशों में भी सफल रहे हैं। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीकी के क्षेत्र में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसके कारण विदेशों में भारत की प्रतिमा और अधिक रोशन हुई है। प्रवासी साहित्य की संवेदना उनके व्यापक अनुभव फलक के कारण महत्त्वपूर्ण है। विश्व के विविध स्थानों के युगीन परिवेश के कुछ पहलू नॉस्टेल्जिया (घर की याद), संस्कृतियों का संगम, विचारधाराओं की मौलिकता, मानव अधिकार जैसे अनेक पहलू इसकी संवेदनाओं के साथ जुड़े हुए हैं।

प्रवासी किसे कहा जाए इसके बारे में मत भिन्नताएँ हैं। डॉ.हरदेव बाहरी

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI,PUNE-17